सदा ही रहेगा ये एहसान हम पर मेरी राजमाँ
ये सारा जहाँ ही ऋणी आपका है मेरी राजमाँ

कहा जो भी तुमने वही कर दिखाया
सभी को ही अपने गले से लगाया
हो प्रेमी या वैरी नजर में तुम्हारी सभी एक से थे मेरी राजमाँ

गृहस्थी को भक्ति मे तुमने सजाया
था गुरमत ये उंगली पकड के चलाया
करम क्या है अपना धरम क्या है अपना तुम्ही ने सिखाया राजमाँ

सत्गुरू से कितने ही रिश्तों को पाया
मगर गुरूसिखी का ही रिश्ता निभाया
गुरूदर पर समर्पण यह साराही जीवन
खुशी से ही अर्पण किया राजमाँ

बनी प्रेरणा तुम सभी के लिए हो
मिशन शहनशाह का तुम बनकर जिए हो
मांगे तुमसे यह वर नमन करके 'दिलवर'
जिए इस मिशन को सभी राजमाँ
सदा ही रहेगा ये एहसान हम पर मेरी राजमाँ

(तर्ज : ये राते ये मौसम नदी का किनारा ये चंचल हवा....)